'सदाबहार' से बगिया में बहार

नरेंद्र कुमार* और **वी. एम. प्रसाद***

प्राचीनकाल से ही मनुष्य विभिन्न रोगों से बचाव एवं उपचार के लिये सदाबहार के फूल, पत्ती, बीजों एवं जड़ों का उपयोग करता आया है। सदाबहार, निरोगी रखने वाला पौधा है। इसके फूल, पत्ती एवं बीजों का सेवन करने से त्वचा संबन्धित फोड़े, फुंसी एवं कैंसर जैसे रोगों से बचा जा सकता है। अत: इसे आसानी से अपने बगीचे में लगाया जा सकता है और इन सभी समस्याओं से छुटकारा पा सकते हैं।

सदाबहार की बगिया

भारतवर्ष में सदाबहार को सुंदरता व औषधीय पौधे के रूप में उपयोग किया जाता है। इसके फूलों को देश के कुछ क्षेत्रों में सदाफूली के नाम से जाना जाता है तथा इसको इंग्लिश में पेरिविंकले नाम से भी जाना जाता है। यह पौधा अनेक औषधीय गुणों से भरपूर होता है और यह अनेक रोगों में काम आता है। इसका फूल वर्षभर खिलता है।

लोग आमतौर पर अपने घरों में सदाबहार का पौधा लगाना अधिक पसंद करने लगे हैं। सदाबहार की दो मुख्य प्रजातियां हैं पर इनकी उत्पत्ति स्पेन, फ्रांस और यूरोप के अन्य क्षेत्रों में हुई थी। वर्तमान में यह दुनिया के कई हिस्सों में पाया जाता है। ग्रेटर पेरिविंकल को सिर्फ दक्षिणी यूरोप में ही देखा जा सकता है इसलिए यह यूरोप का मूल निवासी है। आज भी दुनिया के कई हिस्सों में सदाबहार को सजावटी पौधों के रूप में उगाया जाता है। सदाबहार के छोटे से झाड़ीदार वृक्ष पर सफेद और बैंगनी रंग के छोटे-छोटे गुच्छों में लगे फूल हर घर की शोभा बढ़ाते हैं। अत: इसका पौधा सर्दियों और गर्मियों दोनों मौसम में भी हमेशा फूलों हरा से भरा रहता है। इसलिए लोग इसको ज्यादा पसंद करते हैं। इसके साफ-सुथरे झाड़ीदार पौधों पर लगे अंडाकार हरे पत्ते बहुत ही आकर्षक होते हैं। इसलिए भी लोग सदाबहार को ज्यादा पसंद करते हैं।

यह पौधा झाड़ीनुमा होता है। इसकी ऊंचाई ज्यादा से ज्यादा 1 मीटर तक होती है। इसलिए इसको ज्यादा देखरेख करने की आवश्यकता नहीं होती है। यदि सदाबहार के पौधे की जड़ में बिल्कुल भी पानी ना रहे फिर भी यह कुछ दिन तक अच्छी तरह से फूल देता रहता है। इसलिए इस पौधे को कम पानी वाली जगह पर भी उगाया जा सकता है। इसके पौधे जब पुराने हो जाते हैं तो पूरी तरह से झाड़ी की तरह दिखने लगते हैं। इस समय चाहे तो इसकी छंटाई कर सकते हैं। इनसे नई शाखायें निकलती हैं और अधिक फूल खिलते हैं।

इसके फूल ज्यादातर तीन रंगों में खिलते हैं, जिनमें गुलाबी, बैंगनी और सफेद मुख्य रंग हैं। इसके अलावा भी यह कई रंगों में पाया जाता है। इस फूल में पांच पंखुड़ियां होती हैं। इस फूल की लम्बाई लगभग 1 इंच तक होती है। ये फूल आकार में छोटे होते हैं लेकिन ये प्रतिदिन पौधे पर खिलते हैं। इसलिए इसके फूलों की प्रतिदिन तुड़ाई कर लेनी चाहिए। इससे फूलों का उत्पादन अधिक मिलता है। इन पौधों को धूप बहुत पसंद होती है। गर्मियों के दिनों में सदाबहार के पेड़ फूलों से लद जाते हैं। सदाबहार के पत्ते का रंग गहरा हरा होता है इनका आकार अंडाकार होता है।

सदाबहार के पौधे से इसकी पत्तियों और फूलों को जब भी तोड़ा जाता है, तो थोड़ी सावधानी रखनी चाहिए, क्योंकि इसकी शाखायें मुलायम व कमजोर होती हैं। अत: सभी फूलों को तोड़ने के बाद सदाबहार की छोटी-छोटी फलियां लगने लगती हैं। इन फलियों के अंदर बहुत सारे बीज होते हैं। इन बीजों का आकार गोल होता है। इन बीजों को अच्छी तरह सुखाने के बाद भंडारित कर लेते हैं। इससे अगले वर्ष सदाबहार के पौधे आसानी से उगा सकते हैं।

बीज द्वारा पौधे तैयार करना

सदाबहार के पौधों को तैयार करने के लिए सही तरीका इस प्रकार है कि पौधे को बीज से लगाने के लिए आपको सबसे पहले

*उद्यान विभाग, सैम हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज (इलाहाबाद)

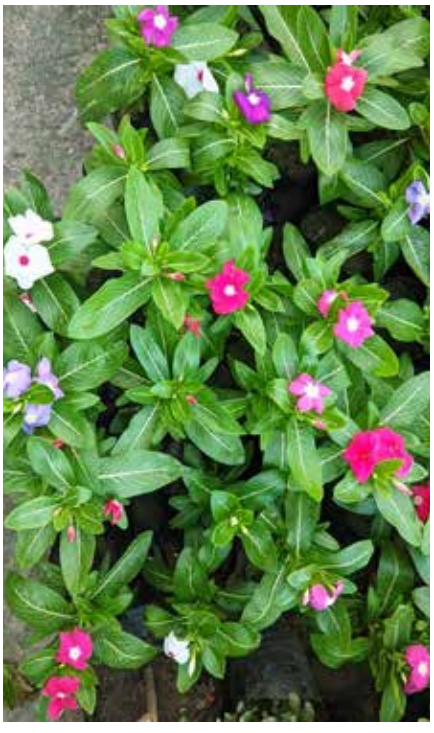

सदाबहार के फूल

एक मिट्टी का गमला लेना चाहिए व एक बात का विशेष ध्यान रखें कि गमले के नीचे छेद होना बहुत जरूरी है। पौधे में अतिरिक्त पानी गमले के छेद के माध्यम से निकल जाता है। मिट्टी भरने से पहले गमले में छेद बंद ना हो पाए इसलिए गमले के नीचे सतह पर कुछ कंकड़ रख देने चाहिए। 50% खेत की मिट्टी और 50% बालू को अच्छी तरह से मिलाना चाहिए। मिट्टी को अच्छी तरह से मिलाकर गमले में भर लें। गमले में ऊपर से बीजों को कुछ-कुछ दूरी पर लगा दें ऊपर से आधा इंच मिट्टी की परत से ढ़ककर पौधे को पानी लगा दें। जब तक बीज उगकर नहीं आ जाते, तब तक पौधे छाया वाले स्थान पर रखें और गमले में हल्की नमी बनाये रखें। जब पौधे थोड़े बड़े हो जाएं तो इन्हें किसी दूसरे गमले में लगा दें।

पौधे की देख-रेख

सदाबहार के पौधे की अच्छी तरह से देख-रेख करने से पौधे पर बहुत सारे फूल आने लगते हैं। इससे पौधे की गुणवत्ता बढ़ने लगती है। इसके पौधे को सीधे मिट्टी में गड्ढा खोदकर लगा सकते हैं, या गमले में भी लगा सकते हैं। ध्यान रखें कि गमले का आकार कम से कम 10 या 12 इंच होना चाहिए। अगर आप इसे किसी छोटे गमले में लगाते हैं तो इससे पौधे पर फूल कम आते हैं। इसलिए बड़े गमले का ही उपयोग करना चाहिए। गमलों को आसानी से उठाकर धूप वाले स्थान पर रख सकते हैं इस पौधे को धूप बहुत ज्यादा पसंद होती है। गर्मियों के दिनों में दिन में दो बार पौधे को पानी देना अच्छा रहता है। जब भी पौधा गमले में लगाएं तो उसे ऊपर तक मिट्टी से ना भरें। इससे पौधे में पानी भरने के लिए जगह नहीं रहती है। यदि सदाबहार के पौधे को गर्मियों में अच्छी तरह से पानी देते हैं तो इसके फूलों का रंग अच्छा होता है। अत: फरवरी से अगस्त के महीने के बीच में इसकी प्रूनिंग कर सकते हैं। इससे पौधा घना होता है व इसके ऊपर और भी ज्यादा फूल आते हैं। जब इसकी किसी शाखा की बीच से कटिंग करते हैं, तो वहां से दो नई शाखाएं निकलती हैं। इसी तरह से पौधा ज्यादा घना होता है और इसके ऊपर ज्यादा फूल आते हैं। इस पौधे को खाद की आवश्यकता नहीं होती है। लेकिन ज्यादा फूलों के लिए इसे महीने में एक बार वर्मीकम्पोस्ट या गोबर की खाद लगा सकते हैं। इसके अलावा इस पौधे को हमेशा ऐसी जगह पर लगाएं जहाँ पर कम से कम 5 से 6 घंटे की धूप पौधे को मिले। इस तरह से सदाबहार के पौधे की अच्छी तरह देखरेख की जा सकती है।

बीजों को इकट्ठा करना

सदाबहार के पौधों में फूल गिरने के बाद गर्मियों के दिनों में बीज बनना शुरू हो जाते हैं। जब पौधे पर छोटी-छोटी फलियां बनना शुरू हो जाएं तो पौधे की देख-रेख अच्छी तरह करें, क्योंकि ये फलियां पकने पर बीच से खुल जाती हैं और बीज इधर-उधर बिखर जाते हैं। इसलिए ध्यान दें कि फली फट न पाये। इसकी फली को फटने से पहले ही पौधे से तोड़कर उससे बीज निकाल लेने चाहिए। यह ध्यान रखना चाहिए कि बीज तोड़ने से पहले पूरी तरह से काले हो गये हों या अच्छी तरह से पक चुके हों। जब अच्छी तरह से बीज नहीं पकते हैं, तो अगले साल तक बीज खराब होने की आशंका रहती है तथा इनका जमाव भी अच्छा नहीं होता है।

आजकल देखा जाए तो लोगों में बालों की समस्या एक आम हो गई है। इसके पौधे में मौजूद औषधीय गुण बालों को मजबूत बनाते हैं। इससे बाल झड़ने बंद हो जाते हैं। सदाबहार के फूलों का प्रयोग करने के लिए एक छोटी सी विधि है कि सदाबहार के लगभग एक कटोरी फूलों को लेकर उन्हें अच्छी तरह से धो लें। इसके बाद उन्हें धूप में सुखाकर फूलों का चूर्ण या पाउडर बना लें। चूर्ण को किसी ऐसे डिब्बे में बंद करें जिससे कि उसमें हवा ना लग पाए क्योंकि हवा लगने से यह खराब हो सकता है।

कुछ दिनों बाद जब भी आप अपने बालों में कोई तेल लगाएं तो उसमें आप थोड़ा सा सदाबहार का चूर्ण मिलाकर लगा सकते हैं। इसका उपयोग करते समय मात्रा का विशेष ध्यान रखें क्योंकि ज्यादा मात्रा में यह आपके बालों को नुकसान भी पहुंचा सकता है। इसलिए सावधानीपूर्ण उपयोग करना चाहिए।

यह समस्या 15-18 साल की आयु के बच्चे में बहुत देखने को मिलती है। यदि चेहरे पर मुहांसे हो गए हैं और वह किसी भी तरह के साबुन, क्रीम, या फिर फेसवॉश से नहीं ठीक हो रहे हैं तो ऐसे में सदाबहार के कुछ घरेलू उपयोग द्वारा अपने चेहरे के मुहांसों को ठीक कर सकते हैं। इसके लिए सदाबहार के कुछ फूल और कोमल पत्तियों को लें और इन्हें अच्छी तरह से पीस लें। इसके बाद इसमें एक चुटकी हल्दी मिलाकर मुहांसे वाले स्थान पर दिन में दो बार लगाएं। इससे बहुत जल्द आराम मिलने लगता है और चेहरे की त्वचा भी अच्छी हो जायेगी। इसके उपयोग से कोई नुकसान भी नहीं होता है।

कटिंग से पौध

सदाबहार के पौधे को कटिंग से लगाने के लिए आपको सबसे पहले एक तेज धार वाला चाकू या कोई भी ब्लेड लेना है। इसके बाद पौधे से लगभग 4 से 5 इंच की कुछ कलम काटनी है। सभी कटिंग के नीचे के पत्तों को हटा दें व ऊपर के पत्तों को रहने दें। इससे कटिंग अच्छी बढ़त कर सकेगी। अत: कटिंग को तैयार करने के बाद आपको एक मिट्टी का गमला लेना है। इसके अंदर बगीचे की मिट्टी और बालू का मिश्रण मिलाकर गमले को भर लें। मिट्टी भरने के बाद अगर आपके पास रूटिंग हार्मोन का पाउडर है तो कटिंग रूटिंग पाउडर को गमले में लगभग 2 इंच की गहराई तक मिला दें। अगर आपके पास रूटिंग हर्मोन पाउडर नहीं है तो आप ऐसे भी इसकी कटिंग को ऐसे ही लगा सकते हैं। कटिंग लगाने के तुरंत बाद गमले में पानी डालकर किसी छाया वाले स्थान पर रख दें। जहां पर हल्की धूप आती हो क्योंकि धूप पौधों के लिए अच्छी होती है।